चार्वाक दर्शन का सामान्य परिचय

→ भारतीय दर्शन में एकमात्र जड़वादी दर्शन के रूप में विख्यात चार्वाक दर्शन एक अत्यंत प्राचीन दर्शन है।

→ जड़वाद से तात्पर्य है – विश्व के मूलतत्व को जड़ अर्थात् भौतिक मानने वाला सिद्धान्त।

→ जड़वाद न केवल विश्व के मूलतत्व को, वरन् आत्म-तत्व को भी मूलतः जड़ ही मानता है।

→ चार्वाक दर्शन पूर्णतः अध्यात्मवाद का विरोधी है।

→ जड़वाद को मूलतत्व मानने के कारण यह विश्व के निर्माता के रूप में ईश्वर को नहीं मानता और न ही आध्यात्मिक मूल्यों के संरक्षक के रूप में नास्तिक दर्शन है।

→ चार्वाक का अर्थों में बताया है, जिनमें से कुछ निम्नवत् हैं :–

(i) → चार्वाक शब्द 'चर्व' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है – चबाना। चूँकि यह जड़वादी दर्शन, 'खाओ पीओ और मौज करो' सिद्धान्त का प्रतिपादक था, अतः यह चार्वाक कहलाया।

(ii) → चार्वाक का एक अर्थ सुन्दर वाणी (चारु+वाक्) भी किया जाता है।

(iii) → कुछ विद्वानों का कहना है कि 'चार्वाक' नामक किसी ऋषि ने इस दर्शन का प्रवर्तन किया था, इसलिए शायद इस दर्शन का नाम चार्वाक पड़ा।

(iv) → कुछ विद्वान स्वयं गुरु बृहस्पति को ही इस दर्शन का प्रवर्तक मानते हैं, तो कुछ इनसे भिन्न कोई अन्य राजगुरु मानते हैं।

→ चार्वाक दर्शन को लोकायत दर्शन भी कहा जाता है। क्योंकि यह आम लोगों में अपने भौतिकवादी विचारों के कारण लोकप्रिय था।

→ कुछ विद्वानों का मानना है कि, यह दर्शन इसी लोक को सत्य के रूप में स्वीकारता है, इसलिए यह लोकायत कहा गया।

⇒ चार्वाक दर्शन के विचार हमें अन्य ग्रंथों से प्राप्त होते हैं, जैसे कि - माधवकृत 'सर्वदर्शन-संग्रह', न्याय-मंजरी, विवरण, सर्वमत-संग्रह, षड्दर्शन समुच्चय, नैषध काव्य (17वाँ सर्ग), प्रबोध चंद्रोदय (नाटक) आदि।

⇒ चार्वाक एकमात्र प्रत्यक्ष को ही प्रमाण के रूप में स्वीकार करता है, क्योंकि प्रत्यक्ष ही एकमात्र यथार्थ ज्ञान देने में सक्षम है।

⇒ चार्वाक दर्शन के अनुसार जो ज्ञान हमें इन्द्रियाँ देती है वह सत्य है, यथार्थ है।

⇒ प्रत्यक्ष के दो प्रकार बताया गया है- (i) बाह्य प्रत्यक्ष (ii) मानस प्रत्यक्ष।

⇒ चार्वाक केवल पंच ज्ञानेन्द्रियों तक ही प्रत्यक्ष को सीमित नहीं रखता। वह मन को भी प्रत्यक्ष ज्ञान देने वाला बताया है, क्योंकि मन सुख-दुःख आदि की स्पष्ट अनुभूति करता है।

⇒ चार्वाक दर्शन में अनुमान एवं शब्द प्रमाण की आलोचना की गई है।

⇒ चार्वाक दर्शन तत्व के रूप में केवल जगत् को ही स्वीकार करता है, क्योंकि प्रत्यक्ष द्वारा जगत् का प्रतीति होती है।

⇒ चार्वाक दर्शन का जगत् सिद्धांत 'स्वभाववाद' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि चार द्रव्य (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) परस्पर मिलकर स्वयं क्रिया करते हैं जिससे जगत् अपने आप बन जाता है।

⇒ चार्वाक चार (4) भूत द्रव्य स्वीकार करता है - पृथ्वी, जल, वायु, एवं अग्नि। चार्वाक आकाश को भूत-द्रव्य नहीं मानता, क्योंकि 'आकाश' उसकी दृष्टि में केवल शून्य है तथा उसका प्रत्यक्ष नहीं होता।

⇒ चार्वाक जगत् के मूल में उपस्थित चार भूतों को जड़ कहता है, अतः उसका सिद्धांत 'जड़वाद' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

⇒ चार्वाक आत्मा रूपी किसी नित्य चेतन अस्तित्व को नहीं मानता एवं उसकी आलोचना करता है।

⇒ चार्वाक दर्शन ईश्वर को नहीं मानता है। इसलिए उसे ईश्वर निन्दनीय एवं वेदनिन्दयी कहा गया है। अतः चार्वाक पूर्णतः नास्तिक दर्शन है।

⇒ चार्वाक दर्शन चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) में से मात्र

अर्थ एवं काम को ही पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार करता है।

⇒ अर्थ उसकी दृष्टि में काम (सुख) की प्राप्ति का साधन मात्र है, इस लिए चार्वाक दर्शन की आचार-मीमांसा 'सुखवादी' हो जाती है।

⇒ चार्वाक मात्र वर्तमान सुख पर जोर देता है। यहाँ पर वर्तमान सुख से तात्पर्य भौतिक सुख से लिया गया है। इसके लिए उनका एक प्रसिद्ध दोहा उद्धृत किया जाता है:—

"यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"॥

अर्थात् जब तक जीवन है तब तक मनुष्य को सुखपूर्वक जीना चाहिए। ऋण लेकर भी घी पीना चाहिए, क्योंकि एक बार इस देह (शरीर) के भस्म हो जाने पर फिर वह यहाँ कैसे लौट सकता है?

———— x ————